खंड: 5, अंक: 5

जून 2022

# संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

## वैश्विक कूटनीति के भारतीय सरोकार

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

दिल्ली विश्वविद्यालय

## मुख्य संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

## संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर


©सीजीएस 2022

रूपांकन: काजल

# संश्लेषण

## वैश्विक कूटनीति के भारतीय सरोकार

अनुक्रमिका

संपादकीय


1. वैश्विक पटल पर भारतीय कूटनीति का परिवर्तनीय स्वरूप – विकास यादव 1–4
2. रूस–यूक्रेन युद्ध और भारतीय कूटनीति के सरोकार – नरेंद्र कुमार 5–9
3. भारत की कूटनीति एवं वैश्विक आकांक्षाएं – दृष्टि साह 10–13
4. वैश्विक अभिशासन का एक महत्वपूर्ण कारक सुरक्षाः भारत की भूमिका का एक अध्ययन – सृष्टि 14–18
5. जलवायु कूटनीति और भारत – चंद्रिका आर्य 19–24

# सम्पादकीय

हिन्दी मासिक पत्रिका संश्लेषण के निरंतर प्रकाशन में वैश्विक अध्ययन केंद्र वर्ष 2018 से अविरत कार्यरत है। निरंतरता की इस श्रंखला में संश्लेषण के इस 47वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता का आभास हो रहा है। अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से यह केंद्र अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के सहयोग, समन्वय एवं संकल्प से मिशन शोध की लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहा है। संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा को प्रकट करता है।

वर्ष 2022 का जून माह वैश्विक स्तर पर भारत के लिए विभिन्न उपलब्धियों, अवसरों एवं चुनौतियों से परिपूर्ण रहा। भारतीय कूटनीति के लिए यह माह भारतीयता के विचार, संस्कार एवं व्यापार की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए भी उपयुक्त रहा। पूर्व दृश्य नीति से पश्चिम दृश्य नीति की ओर अग्रसर भारत ने सउदी अरब ऐमिरात से अपनी द्वी–पक्षीय साझेदारी द्वारा सामरिक सहयोग को बढाया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं शेख मोहम्मद बिन जायेद अल नाहान के मध्य अबू धाबी में मिलन ने व्यापार एंव निवेश के अतिरिक्त भारतीय प्रवासियों के योगदान को भी सराहा। जी–7 के पटल पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विशेष निमंत्रण द्वारा भारत ने फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, दक्षिण अफ्रिका तथा अन्य विकसित राष्ट्रों के साथ अपने व्यापारिक एवं सांस्कृतिक साझेदारी को सुदृढ़ किया। लिस्बन में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के महासागर सम्मेलन में भारत ने 30x30 के माध्यम से भूमि, जल एवं महासागर को वर्ष 2030 तक संरक्षण देने तथा समावेशी विकास लक्ष्य–14 (एसडीजी–14) को सुनिश्चित करने के अपने संकल्प को भी व्यक्त किया।

वैश्विक परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'वैश्विक कूटनीति के भारतीय सरोकार' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ वैश्विक संदर्भ में भारतीय कूटनीति के परिवर्तनीय आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

संपादक मंडल

बहस्पतिवार, 14 जुलाई 2022

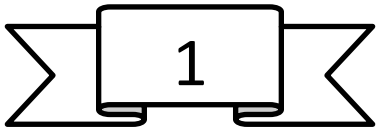


# वैश्विक पटल पर भारतीय कूटनीति का परिवर्तनीय स्वरूप

विकास यादव

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्वतंत्रता के पश्चात् की अवधि से ही भारत की विदेश नीति विकसित होती जा रही है एवं नये आयामों को छू रही है। अतीत से ही सरकारों द्वारा विभिन्न नीतियां एवं दृष्टिकोण लाए गये है जिससें कि राष्ट्र को और विकसित किया जा सके। सरकारों द्वारा सदैव से ही ये प्रयास रहा है कि जिस प्रकार से विश्व भर में परिवर्तित भू राजनैतिक व्यवस्था रहती है उस प्रकार से ही वो अपने राष्ट्र का निर्माण करे एवं नीतिया बनाये। इसलिए अगर हम भारत की विदेश नीति को देखे तो यह नजर आता है कि विश्व भर के देशों से मिश्रित प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती है। यहाँ यह भी समझना महत्वपूर्ण है कि भारत कैसे अपनी विदेश नीति में अहम परिवर्तन के साथ वह राष्ट्र हित से कभी समझौता न करके अपने देश के हितो को सर्वोच्च रखता है। इसलिए हम यह देख सकते है कि भारत की विदेश नीति समय अनुसार परिपक्व हुई है और होती जा रही है।

यदि हम भारत में अब तक की ऐतिहासिक घटनाओं की ओर दृष्टि डालें तो हमें ये देखने को मिलता है कि भारत की विदेश नीति सदैव से ही आदर्श रेखाओं पर आधारित थी। भारत के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् से ही भारत ने कैसे आदर्शवाद एवं व्यवहारिकता को अपना केंद्र बिंदु बनाकर राष्ट्र निर्माण करने का प्रयास किया। उदारहण स्वरूप ये देखा जा सकता है कि स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् के समय में कैसे नेहरू सरकार द्वारा पंचशील की नीति को अपनाया गया जो कि अधिकतर आदर्श रेखाओं पर निर्मित थी, जिसमें शांतिपूर्ण तरीके से रहना और पारस्परिक सह–अस्तित्व पर बल दिया गया।

भारत की विदेश नीति और उसकी सामरिक स्वायत्तता को शीत युद्ध के समय भी देखा जा सकता है। जब विश्व शीत युद्ध के दौर में था तब भारत अपनी सामरिक स्वायत्तता को बनाये रखने में सक्षम रहा। भारत ने किसी भी ब्लॉक के साथ न मिलकर एक सैद्धान्तिक रुख को दर्शाया। उस समय के अंतरास्ट्रीय दबावों का सामना करते हुए भारत ने जिस प्रकार से अपने आपको विश्व पटल पर रखा वह सराहना योग्य है। भारत किसी भी दबाव में न आकर गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत

के साथ आगे बढ़ा। गुटनिरपेक्षता की नीति एक तरह से आदर्श एवं सामंजस्यपूर्ण तरीके के ऊपर आधारित थी।

भारतीय इतिहास को देखे तो यह भी जानना आवश्यक है कि इतिहास में भारत को कई कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा है। भारत को 1962 में चीन के साथ युद्ध, 1965 में पाकिस्तान के साथ, उसके पश्चात कारगिल और सियाचिन सँघर्ष के रूप में अनेकों विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। विशेष रूप से यह भी देखा जा सकता है कि भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ अपनी विदेश नीति को लेकर कुछ वांछित परिणाम नही आये है, जैसा कि इस्थिरता एवं शांति को बनाए रखने में भारत को हमेशा विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। तथापि, शांति एवं स्थिरता के लिए भारत ने सदैव अपने पड़ोसी देशों के साथ वार्तालापों से अपना पक्ष भी रखा।

भारतीय विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन तब आया जब भारत ने ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्धा (1974) और पोखरण के रूप में भारतीय राजनयिकों के कंधों पर एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी। इन न्यूक्लियर पावर प्रोजक्शनो के साथ भारत ने पहली बार एक नया आयाम कायम किया और विश्व को यह विश्वास भी दिलाया कि भारत कभी भी अपने परमाणु हथियारों का दुरुपयोग नही करेगा। भारत विश्व को यह समझने में सफल एवं सक्षम रहा कि वह एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति बना रहेगा। इस संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि भारत ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि भारत नो फर्स्ट यूज सिद्धांत का अनुसरण करेगा।

भू–राजनीतिक एवं भू–आर्थिक प्रगति हेतु भी भारत ने अपनी विदेश नीति के अंतर्गत आवश्यक निर्णय लिए है। इस संदर्भ में भारत की और से नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी और एक्ट ईस्ट पॉलिसी को अपनाया गया। परिणामस्वरूप यह देखा जा सकता है कि भारत को भू–राजनीतिक एवं भू आर्थिक प्रगति के विषय में एक बढ़त प्राप्त हुई। भारत अपने पड़ोसी देशों जैसे कि म्यांमार, नेपाल, भूटान, श्रीलंका इत्यादि के साथ एक सुदृढ़ संबंध बनाने में सफल रहा। भारत सदैव से ही अपने पड़ोसी देशों के साथ एक सकारात्मक विदेश नीति को लेकर सुदृढ़ संबंधों को बनाने के लिए प्रयास करता है।

भारत की विदेश नीति यह दर्शाती है कि वह पश्चिमी एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशियाई  क्षेत्रों में अपनी नीतियों द्वारा एक विश्वसनीय भागीदार है। इस प्रकार भारत ने अपनी विदेश नीति से इन क्षेत्रों में अपने महत्वपूर्ण भू– राजनीतिक और भू–सामरिक हितों को सुरक्षित किया है। भारत ने वैश्विक पटलों पर भी अपने आपको एक महत्वपूर्ण भूमिका के रूप मै रखा ह जहाँ पर भारतीय कूटनीति का परिवर्तनीय स्वरूप देखा जा सकता है जैसे कि ब्रिक्स (BRIC),

जी ट्वेंटी (G20), जी फॉर (G4), आई टू यू टू (I2U2), बिम्सटेक (BIMSTEC), मेकाँग गंगा कोऑपरेशन (MEKONG GANGA COOPERATION), इंडिया–एसियान एफटीए (INDIA&ASEAN FTA), सार्क (SAARC) ईस्ट एशिया सम्मेलन (EAST ASIA SUMMIT) , इंडिया सेंट्रल एशिया डायलाग (INDIA CENTRAL AISA DIALOGUE), क्वैड (QUAD), इत्यादि पटलों पर भारत एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में नजर आया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि वैश्विक पटल पर भारत अपनी कूटनीति को लेकर कही न कही सफल रहा है। इतिहास से ही भारत को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है परंतु भारत ने सकारात्मकता को अपनाते हुये महत्वपूर्ण निर्णय लिए है जो कि आगे जाकर कारगर भी सिद्ध हुये। इसलिए भारत अपनी कूटनीति एवं रणनीति में स्वायत्तता रखने में सफल रहा है। भारत ने सदैव से ही अपनी कूटनीति के माध्यम से सम्प्रभुता, क्षत्रिय अखंडता और पारस्परिक सह–अस्तित्व के मूल्यों का सम्मान किया है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों से भी सदैव सकारात्मकता का रुख अपनाते हुए संवाद में सम्मिलित होने और संघर्षो का सहजता एवं शांतिपूर्ण तरीके से हल निकालने के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों पर बल दिया है जो कि भारत की कूटनीति का परिवर्तनीय स्वरूप दर्शाती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत अब विश्व भर में एक महाशक्ति के रूप में देखा जा रहा है जो कि एक नयी ऊर्जा के साथ विश्व पटल पर आगे बढ़ रहा है।

## संदर्भ-सूची:

Arijit, Mazumdar. (2020). India's Public Diplomacy in twenty-First Century: Components, Objectives and Challenges. Sage Publications.

Anil, Wadhwa. (2019). India's foreign policy in the 21st century. New Delhi: India Perspectives.

Tonny, Abbott. (2022, April 27). India as a democratic superpower. The Hindu. https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/India-as-a-democratic-superpower/article65356547.ece

♦♦♦♦♦

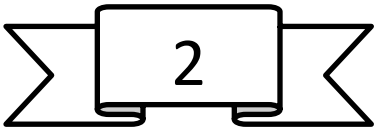


# रूस–यूक्रेन युद्ध और भारतीय कूटनीति के सरोकार

नरेंद्र कुमार

सहायक आचार्य

मोतीलाल नेहरू कॉलेज (संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय

रूस–यूक्रेन युद्ध के दौर मे भारतीय कूटनीति को रणनीतिक तौर पर देखा जा सकता है। एक ओर भारत व रूस के मध्य संबद्ध लंबे समय से सहयोग पूर्ण बने हुए है। वही दूसरी और पश्चिम के देश (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इत्यादि) भी भारत के एक बड़े सहभागी के रूप मे अपनी भूमिका निभा रहे है। इसलिए रूस–यूक्रेन युद्ध को भारतीय कूटनीतिक के लिए एक परीक्षा के रूप मे देखा जा सकता है कि भारत अपने राष्ट्रीय हित को किस प्रकार पश्चिमी देश और रूस दोनों के सहयाग से पूरा कर सकता है। जब विदेश नीति या कूटनीति की बात की जाती है तो प्रत्येक देश वैश्विक परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। क्योंकि विदेश नीति पर ही देश का हित निर्भर करता है। परंतु देश हित के लिए यदि  कूटनीति के सरोकार शांतिपूर्ण हा तो विभिन्न देशों और संगठनों से समर्थन के आसार बहुत अधिक बढ़ जाते हैं। भारतीय विदेश नीति हमेशा शांति पर आधारित रही है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धांतों मे सम्पूर्ण विश्वास दिखया है और अन्य देशों से भी अपेक्षा रखी हैं कि वह अपने विवादों का शांति पूर्ण मध्यम से समाधान करे। रूस–यूक्रेन युद्ध पर भी भारत का यह मत है कि दोनों देश अपने विवादों को शांतिपूर्ण माध्यम से समाधान करे। क्योंकि दोनों देशों के बीच युद्ध के कारण सम्पूर्ण विश्व को हानि उठानी पड रही है। उदाहरण के तौर अंतर्राष्ट्रोय स्तर पर खनिज तेल के मूल्यों मे वृद्धि और खाद्यय सामाग्री की आपूर्ति मे कमी इत्यादि। इसलिए विश्व के साथ भारत पर भी रूस–यूक्रेन युद्ध का विपरीत प्रभाव पड़ा रहा हैं। इसे लेख मे रूस–यूक्रेन युद्ध के दौर मे भारतीय कूटनीति के सरोकार को समझने का प्रयास किया गया हैं। सबसे पहले इसमें रूस पर भारत की सामरिक निर्भरता को बताया गया है। इसके पश्चात यह समझने का प्रयास किया है कि चीन के कारण भारत के लिए क्यों रूस महत्वपूर्ण बना हुआ है। और अंत मे यह देखना प्रयास किया गया है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत कहां तक तटस्थ रहा है।

## रूस पर भारत की सामरिक निर्भरता

भारत और रूस के संबंध करीब 70 वर्षों से घनिष्ठ बने हुए है। आवश्यकता पड़ने पर रूस ने कई बार भारत का साथ दिया है। कश्मीर पर जब पाकिस्तान कई बार सुरक्षा परिषद मे प्रस्ताव लेकर आया तो रूस ने अपने वीटो का प्रयोग भारत के पक्ष मे किया। वही 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान रूस ने दोनों देशों के मध्य ताशकंद समझौता कराया। परंतु रूस का बड़ा समर्थन हमें 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध मे मिला जब भारत ने रूस के साथ 20 वर्षो की सुरक्षा संधि की जिस कारण भारत बांग्लादेश को पाकिस्तान से स्वतंत्रत कराने मे सफल रहा। और इसी दौरान जब अमेरिका ने पाकिस्तान के लिए अपना सातवां जंगी बेड़ा भेजा तो इसके जबाब मे रूस ने भी भारत के पक्ष मे अपना जंगी बेड़ा भेजा। जिस कारण अमेरिका को पीछे हटना पड़ा और 1971 के युद्ध मे भारत विजय रहा।

इसलिए भारत के लिए यह बहुत मुश्किल होगा कि वह रूस के साथ अपने संबन्धों को कम कर दे। स्वतन्त्रता के समय से ही रूस भारत का एक रणनीतिक भागीदार रहा हैं। भारत अपनी सेना मे बड़ी मात्रा मे रूसी हत्यारों का प्रयोग करता हैं। भारत अपनी सेना मे लगभग 97 प्रतिशत रूसी युद्ध टैंकों का प्रयोग करता है। भारत कि वायु सेना मे अधिकतर लड़ाकू विमान रूस निर्मित है। अगर पांडुबियों की बात करे तो करीब 67 प्रतिशत इनमें से रूसी निर्मित है। इसके अतिरिक्त मिसाइल, आँटी–शिप क्रूज मिसाइल के लिए भारत रूस पर निर्भर रहा है। यहा तक कि भारत ने अपनी सबसे उन्नत मिसाइल ब्रहमोस भी रूस के साथ मिलकर विकसित की है।

साथ ही भारत अपनी आवश्यकता का करीब 80 प्रतिशत तेल और प्राकृतिक गैस का लगभग आधा भाग आयात करता है। इसलिए जब रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल से अधिक हो गई तो भारत को गंभीर मुद्रास्फीति के दबाव का सामना करना पड़ा। अत जब रूस ने मार्च 2022 में 20–35 डॉलर प्रति बैरल के लिए अपने तेल की पेशकश की तो भारत ने तुरंत इसे स्वीकार कर लिया। (https://www-eurasiareview-com/27042022&indian&foreign&policy&and&the&russian&ukrainian&war&analysis) और कुछ ही महीनों मे पिछले वर्ष की तुलना मे रूस से भारत को तेल का निर्यात दोगुना हो गया। रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान भी भारत पश्चिम के देशों के दबाव के बावजूद अपने हित के लिए रूस के साथ व्यापार कर रहा है । भारत की रूस पर इस प्रकार की निर्भरता के कारण ही भारत का झुकाव रूस की और रहा है।

चीन मुख्य कारण

कोई भी रणनीति बनाते समय भारतीय रणनीतिकार चीन की स्थिति को सदैव ध्यान रखते है। भारत की हजारों किलोमीटर सीमा चीन के मिली हुई है। दोनों एशिया के मुख्य देश है।

समय–समय दोनों देशों के मध्य विवाद उभरकर आता रहता है। विवाद की यह स्थिति उस समय गंभीर बन गई जब 2020 मे लद्दाख की गलवान वेल्लि में दोनों देशों की सेना के मध्य आमने–सामने का संघर्ष देखने मे मिला, जिसमे भारत के कई सैनिक शहीद हो गई। जिसमे कई चीन के सैनिक भी मारे गए। चीन के साथ विदद्यमान सीमा विवाद के कारण अपनी सामरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रूस– भारत का एक महत्वपूर्ण साझीदार बना हुआ है, जिस कारण पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद भी भारत ने रूस से अपने संबंध समाप्त नहीं किए। रूस आज भी भारत का एक रणनीतिकार सहयोगी बना हुआ है। भारत के प्रति चीन की आक्रमक नीति, भारत का अपने हितो की सुरक्षा के लिए रूस की और जाना भारत की आवश्यकता बनी हुई है।

रूस–यूक्रेन युद्ध और भारत

रूस–यूक्रेन यदि लंबे समय तक चलता रहा तो भारत के लिए इसके हानिकारक परिणाम हो सकते है। इसके मुख्य कारण इस प्रकार है। एक, भारत बहुत हद तक अपनी ऊर्जा अवश्यकतों के लिए रूस और यूक्रेन दोनों पर निर्भर है। एक विकासशील देश होने के कारण भारत यह चाहेगा कि दोनों देशों के बीच युद्ध जल्द दे जल्द समाप्त हो। युद्ध के कारण तेल से लेकर खदाय सामग्री के मूल्यों मे बहुत अधिक वृद्धि देखने मे मिली है। दूसरा कारण यह है कि यदि भारत पश्चिमी देशों के दबाव के कारण रूस से दूर जाता है तो भारत का रक्षा क्षेत्र बुरी तरहा प्रभावित हो सकता है। क्योंकि हम अपनी रक्षा क्षेत्र का अधिकतर समान रूस से निर्यात करते है। तीसरा कारण यह है कि रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण अमेरिका का झुकाव यूरोप की और चला गया है। हिन्द महासागर मे अमेरिका भारत का एक मुख्य साझेदार बनकर उभरा है। अत भारत के राष्ट्रीय हित के लिए यह सही नहीं है कि अमेरिका का पूरा ध्यान यूरोप पर रहे। इससे चीन को हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर म अपनी स्थिति बढ़ाने का अवशर मिलेगा।

रूस–यूक्रेन युद्ध और भारतीय पक्ष

रूस–यूक्रेन के दौरान भारत ने अधिकतर अवशर पर तटस्था दिखाई है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद मे रूस द्वारा यूक्रेन पर हमले के खिलाफ कोई प्रस्ताव लाया गया तो भारत ने इस पर अपना कोई मत नहीं दिया और तीन बार अपनी अनुपस्थिति दर्ज कराई। इसके अतिरिक्त भारत ने रूस से अपना व्यापार भी जारी रखा। मुख्यतौर पर अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रूस से और अधिक तेल आयात कर रहा है। (https://www-eurasiareview-com/27042022&indian&foreign&policy&and&the&russian&ukrainian&war&analysis/]06/07/2022)

परंतु जब रूस–यूक्रेन युद्ध को लेकर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय से अपील की गई कि वह यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की निंदा करे और रूस को यह आदेश दे कि वह तुरंत यूक्रेन पर आक्रमण रोके। अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने भी अपनी पड़ताल म यह पाया कि रूस ने अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन किया है। अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय मे भारतीय जज और पूर्व उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश दलवीर भण्डारी ने भारतीय सरकार के विचार के विपरीत रूस के खिलाफ मत दिया। इस पर भारतीय विदेश मंतत्रलया का कहेना था कि यह उनका व्यक्तिगत पक्ष है यह भारतीय सरकार की राय नहीं है। (https://www-thehindu-com/opinion/lead/indias&stand&on&the&ukraine&war&is&tragic/article65243820-ece]06/07/2022)

रूस–यूक्रेन युद्ध के संदर्भ मे यदि भारत की विदेश नीति को देखा जाए तो अधिकतर अवशर पर भारत ने तटस्था ही दिखाई है। और दोनों पक्षों से अपील की है कि वह अपने विवादों का शांतिपूर्ण माध्यम से समाधान करे। परंतु पश्चिम के देशों का हमेशा यह प्रयास रहा है कि भारत अपनी तटस्था की नीति को त्याग कर रूस पर लगे विभिन्न प्रतिबंधों का साथ दे और यूक्रेन पर रूस के हमले की कड़ी निंदा करे। भारत के लिए यह बहुत मुश्किल होगा कि वह रूस से अपने सम्बन्धों को कम करे। क्योंकि आज भी भारत–रूस का मुख्य रणनीतिक भागीदार है। परंतु रूस के अतिरिक्त भारत के पश्चिम के देशों के साथ भी अच्छे संबंध है। अंत कहे सकते है कि भारत अपने राष्ट्रीय हित के लिए रूस और पश्चिम के देशों के बीच संतुलन बनाकर चल रहा है। भारत के लिए ये स्थिति चुनौतीपूर्ण है कि भारत पश्चिमी देशों को नाराज करे बिना रूस के साथ अपने सम्बन्धों किस प्रकार सहयोगपूर्ण बनाए रखे। रूस यूक्रेन विवाद के मध्य 400 एयर डिफेंस से संबंधित संकट भी उत्पन्न हो सकता है। भारत अपनी साठ प्रतिशत सैन्य आपूर्ति के लिए रूस पर आश्रित है। इसलिए भारत ने अभी खुल कर अपना पक्ष साझा नहीं किया है।

संदर्भ–सूची–

https://www.eurasiareview.com/27042022-indian-foreign-policy-and-the-russian-ukrainian-war-analysis/)

(https://www.thehindu.com/opinion/lead/indias-stand-on-the-ukraine-war-is-tragic/article65243820.ece,06/07/2022)

♦♦♦♦♦

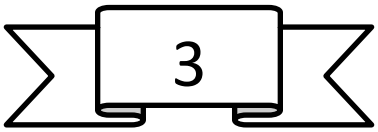


# भारत की कूटनीति एवं वैश्विक आकांक्षाएं

## दृष्टि साह

## शोधार्थीए राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्तमान विश्व व्यवस्था में भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखा जा रहा है। भारत विश्व में अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर रहा है जिससे कि भारत का भू– राजनीतिक प्रभाव बहुध्रुवीय व्यवस्था में अधिक प्रबल प्रदर्शित हो रहे है। विभिन्न शक्ति केंद्रों के मध्य भारत विश्व भर में निरंतर विकसित हो रहा है और अपनी गतिशीलता को बनाएं रखने में सफल हो रहा है। भारत न केवल दक्षिण एशिया में अपितु विश्व भर में स्वयं को शक्तिशाली और जिम्मेदार देश के रूप में बनाए रखने में सक्षम रहा है। उदाहरण के लिए देखा जा सकता है कि भारत वैश्विक संस्थानों जैसे कि यू एन ओ ( UNO), एस सी ओ (SCO), ब्रिक्स (BRIC) इत्यादि के माध्यम से अपनी अहम भूमिका के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में न केवल एशिया परन्तु विश्व भर में देखा जा सकता है।

भारत अपनी वैश्विक कूटनीति को लेकर सदैव से ही सिद्धान्तों का पालन करता रहा है। उदारहण के लिए देखा जा सकता है कि NAM 2.0 के सिद्धान्तों का पालन करते हुए भारत ने रूस–यूक्रेन संघर्ष के बारे में एक सैद्धान्तिक रुख अपनाया। भारत ने किसी का भी पक्ष न लेकर एवं कोई भी विकसित देशों के दबाव में न आकर अपना कूटनीतिक पक्ष का चुनाव किया। हाल ही में ऑपरेशन गंगा के अंतर्गत भी भारत के सुदृढ़ राजनीतिक प्रभाव को देखा जा सकता है जिसमें भारत कैसे सफलतापूर्वक अपने नागरिकों का बचाव करने में सक्षम रहा जो कि रूस एवं यूक्रेन के युद्ध की वजह से फंसे हुए थे। क्वैड (Quad) एवं विभिन्न सैन्य अन्तरसंचालन व्यवस्थाओं के माध्यम से भारत को इंडो–पैसेफिक (Indo&Pacific) क्षेत्र में भी बहुत सकारात्मक लाभांश एवं सुदृढ़ शक्ति मिली है जिससे कि भारत अपने पारस्परिक रणनीतिक हितों का निर्वहन कर सके जैसे कि इंडो पैसेफिक (Indo&Pacific) क्षेत्र में चीन की विस्तारवादी नीति पर कड़ी नजर रखना इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण देखा जा सकता है।

भारत का राजनीतिक दबदबा मध्य एशिया एवं मध्य पूर्वी देशों में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए भारत का इजराइल एवं फिलिस्तीन (Israel and Palestine) के संदर्भ में डी–हायफेंनेटेड

(de-hyphenated) कूटनीति का पालन करना और आई टू यू टू (I2U2) साझेदारी में प्रवेश करना जिससे कि भारत अपने राजनीतिक एवं आर्थिक लाभों को सुरक्षित करने में सफल रहा। साथ ही भारत ईरान, इजराइल, सऊदी अरेबिया, अमेरिका, इत्यादि देशों के साथ सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाने में भी सफल रहा है और यह भी देखा जा सकता है कि भारत अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों के माध्यम से मध्य एशियाई देशों के साथ भी अच्छे सम्बन्धों को बनाने मै सफल हुआ है। उदाहरण के लिए देखा जाए तो यह समझा जा सकता है कि कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, अफगानिस्तान, जैसे देशों के साथ भारत की कूटनोति बहुत महत्वपूर्ण है चाहे वह आधारिक संरचना को लेकर हो, या ऊर्जा सुरक्षा एवं संयोजकता को लेकर हो, या चाहबार पोर्ट (Chabahar Port) को लेकर हो या अन्य महत्वपूर्ण विषयों को लेकर हो।

आर्थिक रूप से देखा जाए तो भारत 2026–2027 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना चाहता है। इसलिए भारत के आर्थिक उदेश्यों को पूरा करने के लिए व्यापार समझौते काफी महत्वपूर्ण है। अतः इस संदर्भ में भारत एवं यूरोपियन यूनियन, भारत–यू के एवं अन्य देशों के साथ समझौते केंद्र बिंदु है। गाँधीवादी दर्शन का पालन करते हुये, भारत एक ऐसा विश्व के निर्माण की संकल्पना करना चाहता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने आपको विकसित करने का अवसर मिले और उसकी मूलभूत आवश्यकताओं का निर्वहन हो। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए भारत सदैव मानवीय सहयोग के लिए आगे आया है। उदाहरण के लिए यह देखा जा सकता है कि कैसे भारत ने विकट परिस्थितियों में कई देशों की मानवीय सहायता की जिसमे की श्वैक्सीन मैत्री पहल' [Vaccine Maitri Initiative] के अंतर्गत भारत ने विश्व भर में चिकित्सा सहायता एवं मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाई।

विश्व व्यवस्था में अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए भारत अब एक प्रकार से नेतृत्व की भूमिका में भी है, भारत न केवल जी 20 (G20) और यु न एस सी (UNSC) में अपितु अन्य बहुपक्षीय मंचो पर भी नेतृत्व करने में सक्षम रहा है। भारत एक ऐसी विश्व संकल्पना प्रस्तुत करना चाहता है जहा पर प्रदूषण और जलवायु की समस्या, असमानता, मानव तस्करी, परमाणु हथियारों का बढ़ता हुआ प्रकोप इत्यादि जैसे संकटो से मुक्त विश्व हो और कोई संकट की परिस्थितियां न हो। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विश्वके महत्वपूर्ण विषयों को लेकर भारत की भूमिका बहुत निर्णायक है।

निष्कर्षत: यह स्वीकार करना अतिशयोक्ति नही होगा कि भारतीय विदेश नीति ने भारत के हितों की रक्षा करते हुए एक साहसिक दृष्टिकोण अपनाया है। भारत के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि भारत सदैव बल या युद्ध के स्थान शांति एवं वार्तालाप में विश्वास रखता है, चाहे वह पिछले वर्ष रूस–फिलिस्तीन के विषय पर भारत की राय हो या जारी रूस–यूक्रेन विषय पर। आज विश्व भारत को एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में देख रही है जिसका लोकतांत्रिक मूल्यों पर गहरा विश्वास है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय कूटनीति को सदैव की तरह लोकतंत्र की मुख्य विशेषताओं पर ही केंद्रित होने की आवश्यकता है। इसलिए भारत हमेशा से ही वैश्विक विषयों का समाधान करने के लिए भागीदारी, विचार–विमर्श और आम सहमति पर ही बल देता आया है। आज भारत हर प्रमुख देशों के साथ मिलकर अपने आपको संतुलित करने में सक्षम है। हाल ही मं देखा जा सकता है कि भारतीय विदेश मंत्री ने कहा कि हमें ष्अमेरिका के साथ जुड़ना, चीन को प्रबंधित करना, रूस को आश्वस्त करनाष है। इस प्रकार NAM 2.0 के दृष्टिकोण का बेहतर ढंग से पालन हो सकता है। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि वसुधैव कुटुम्बकम के संदेश का पालन करने के लिए अभी एक लंबा सफर शेष है जहां पर विश्व में एक ऐसी व्यवस्था हो जहां पर शांतिपूर्ण तरीके से जीवन हो और रहने के लिए एक समृद्ध जगह हो। भारत सदैव से ही इस प्रकार की विश्व व्यवस्था की संकल्पना देता आ रहा है और निरंतर प्रयास करता रहा है कि विश्व में शांति एवं सामंजस्य बना रहे।

## संदर्भ सूची:


- Harsh V. Pant. (2020, December 16). Indian Foreign Policy and Its Aspirations: Institutional Design Matters.
- Monish, Tourangbam. (2022, March 14). The new Geometry of India's Foreign Policy. The Diplomat.
- Samir, Saran (2022, January). India at 75: Aspirations, Ambitions and Approaches. New Delhi: Observer Research Foundation.
- Santishree, Dhulipudi Pandit and Arvind Kumar. (2022, May 21). How India's diplomacy changed in the last 75 years. Sunday Guardian live.


♦♦♦♦♦

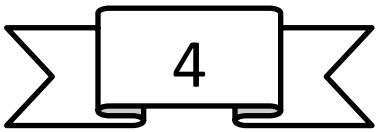


# वैश्विक अभिशासन का एक महत्वपूर्ण कारक सुरक्षाः भारत की भूमिका का एक अध्ययन

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैश्विक सुरक्षा की दृष्टि से भारत का वैश्विक अभिशासन के लिए स्थायी महत्व है। वैश्विक अभिशासन वैश्विक स्तर पर सामूहिक कार्यों के समन्वय के लिए विविध कर्ताओं को साथ लाता है। वैश्विक अभिशासन का लक्ष्य विशेष रूप से शांति व सुरक्षा, संघर्ष के लिए मध्यस्था प्रणाली तथा उद्योगों के लिए एकीकृत मानक को प्रदान करना है। एक सुरक्षा कर्ता के रूप में भारत की प्रासंगिकता का आकलन इसकी गतिविधियों तथा प्रमुख समकालीन सुरक्षा क्षेत्र के भीतर विकास को प्रभावित करने की क्षमता के संदर्भ में किया जा सकता है।

वर्ष 2011 में अफगानिस्तान में भारत की सहभागिता की परिणिती को चिन्हित किया जाता है। अफगानिस्तान–भारत रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर अफगानिस्तान के लिए इस प्रकार का प्रथम कार्य था। तथा नवंबर 2011 में भारत ने तुर्की द्वारा आयोजित "एशिया के हृदय" (Heart of Asia) में सुरक्षा तथा सहयोग सम्मेलन में भाग लिया। इन घटनाओं का महत्व भारत की सहभागिता तथा अफगानिस्तान में अपनी दृढ़ता स्थापित करने और सुदृढ़ करने के प्रयासों में निहित है, जिससे कि न केवल अफगानिस्तान के भीतर तथापि मध्य एशिया में भी प्रभाव डाला जा सके। भारत के लिए अफगान सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने के प्रावधानों सहित, साझेदारी समझौते ने राष्ट्रीय सुरक्षा विषयों पर घनिष्ठ क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग बढ़ाने का आहान किया। हाल के वर्षों में भारत ने अफगानिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ किया है। तथा बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के अंतर्गत भी अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। यह विभिन्न मंचों पर भारतीय राजनयिकों, वार्ताकारों तथा निर्णय निर्माताओं के समूह के रूप में भारतीय रणनीतिक व्यवहार में एक नए चरण का प्रतीक है। इनमें पिछले एक दशक में यूरोपीय शहरों में अफगान नेताओं के साथ हुए विभिन्न अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत की उपस्थिति, दक्षिण एशियाई क्षत्रीय सहयोग संघ (सार्क), शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ), उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) तथा संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत सम्मिलित है।

अफगानिस्तान के लिए पाँचवा सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता बनने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर लगभग 2.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर देने के बावजूद भारत की भूमिका तथा हितों को अनदेखा कर दिया जाता है। अमेरिकी नीति ने भारत को एक अस्थिर कारक के रूप में माना है, जिससे भारत के प्रत्येक पहल व संकेत से पाकिस्तान में संदेह और नाराजगी उत्पन्न हुई। अफगानिस्तान के प्रति भारत की रणनीतिक दुगुनी रही हैः– दिल व दिमाग से जीतने के लिए सॉफ्ट पावर का प्रयोग और अफगानिस्तान को व्यापार तथा परिवहन के एक क्षेत्रीय परिवेश में एकीकृत करना। भारतीय कंपनियां और भारत सरकार सड़के बना रही है, चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कर रही है और शैक्षणिक पहलुओं का नेतृत्व कर रही है। इस प्रकार की परियोजनाएं रणनीतिक हित के बिना नहीं है। जैसे 218 किलोमीटर लंबे जरंज–डेलाराम राजमार्ग का निर्माण, ईरान के माध्यम से समुद्र तक अफगानिस्तान की पहुँच को सक्षम करना और अफगानिस्तान के लिए भारतीय सामानों के लिए एक छोटा मार्ग प्रदान करना। भारत की सीमा सड़क संगठन ने 2008 में इस प्रमुख परियोजना को पूर्ण किया 2007 में अफगानिस्तान को सार्क का पूर्ण सदस्य बनाने की पहल के पीछे भारत ही प्रमुख प्रवर्तक था। भारतीय सैन्य जुड़ाव की संभावना दूर–दूर तक है। भारत द्वारा विशेष रूप से ईरान और रूस जैसे क्षेत्रीय खिलाड़ियों के माध्यम से अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए राजनयिक प्रयासों को शीघ्र करने की अधिक संभावना है। इस संबंध में, भारत ने व्यापक अफगान नीति विकसित करने में दृढ़ता और कौशल दिखाया है।

इसके साथ ही, हाल ही में विश्व के दो महत्वपूर्ण संगठनों– शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) तथा क्वाड (चतुर्गट) की भूमिका में भी परिवर्तन आया है। यह संयोग है कि एससीओ और क्वाड की शिखर वार्ताएं एक ही माह में आयोजित हुई। भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने इस दोनों शिखर वार्ताओं में भाग लिया।

तजाकिस्तान की राजधानी दुशावं में सम्पन्न एससीओ शिखर वार्ता अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकवादियों के आक्रमण की छाया में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्रथमतया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अफगानिस्तान के घटनाक्रम पर भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। तालिबान का नाम लिए बिना ही आतंकवाद की नई हकूमत को अस्वीकृत कर दिया। उन्होंने कहा कि नई हुकूमत समावेशी नहीं है तथा यह विचार–विमर्श के स्थान पर हिंसा का सहारा लेकर बनी है। उन्होंने इसे मान्यता देने के बारे में विश्व समुदाय को भी आगाह किया। भारत का मानना है कि अधिक विचार–विमर्श कर सामूहिक रूप से मान्यता के बारे में निर्णय करना चाहिए। इसमें संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को भी स्वीकार करना चाहिए। भारत की ओर से यह कथन अधिक साहसिक है तथा आदर्श अन्तराष्ट्रिय राजनीति तथा नैतिकता के अनुरूप है।

वास्तव में तालिबान शासन से सबसे अधिक संकट भारत को है। चीन क लिए अफगानिस्तान से आतंकवाद का अधिक संकट नहीं है। रूस के प्रभाव वाले मध्य एशिया के देशों के लिए भी यह संकट अधिक घातक नहीं है। इन देशों के साथ सुरक्षा गठबंधन के माध्यम से रूस सीमा पर किसी भी आतंकवादी गतिविधि को रोकने में सक्षम है। भारत के लिए दाहरी समस्या है। तालिबान के साथ ही इस आतंकवादी संगठन का संचालन करने वाले पाकिस्तान की दृष्टि जम्मू–कश्मीर पर है। जैसे ही तालिबान शासक अफगानिस्तान में अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। पाकिस्तान की सीमावर्ती क्षेत्रों से आतंकवादी हलचल प्रारंभ हो जाएगी। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई बांग्लादेश की स्थापना का बदला लेने के लिए भारत के विरुद्ध कुचक्र अवश्य चलेगी। जम्मू–कश्मीर ही नहीं अपितु पंजाब सहित सीमावर्ती राज्यों में अस्थिरता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाएगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारण और उसकी सफलता के कुछ विशिष्ट आधार होते है, जिनमें भू–राजनैतिक तथा भू–सामरिक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार बनने से भारत विरोधी शक्तियां समूहबद्ध होती प्रदर्शित हो रही है। इससे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रहा हैा कि भारत के लिए चुनौती बढ़ गई है। शक्ति संतुलन, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक हितों की रक्षा तथा तालिबान पर दबाव बनाए रखने के लिए अफगानिस्तान में भारत समर्थक शक्तियों का सुदृढ़ रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें पूर्व की भारत की नीति की तरह आर्थिक, सामरिक तथा राजनीतिक समर्थन मिलता रहना चाहिए।

वैश्विक अभिशासन के अंतर्गत वैश्विक सुरक्षा के पहलू के क्षेत्र में भारत की प्रासंगिकता को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76 वें सत्र को भारत के प्रधानमंत्री ने संबोधित करते हुए कहा कि नियम आधारित विश्व व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अंतराष्ट्रीय समुदाय को एक स्वर में बोलना होगा। तथा इसके साथ ही, इस तथ्य का भी उल्लेख किया कि जो देश आतंकवाद का प्रयोग राजनीतिक साधन के रूप में कर रहे है, उन्हें यह समझना होगा कि आतंकवाद उनके लिए भी समान रूप से संकट है।

वैश्विक राजनय में अमेरिका क पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण खंड यूरोप का है। फ्रांस के साथ रफाल लड़ाकू विमानों की खरीद का समझौता कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय वायु सुरक्षा को संरक्षित व सशक्त किया है। इसके साथ–साथ वैश्विक स्तर पर एक राजनय के भाग पर भी विश्वसनीय सहयोग अर्जित करने में सफलता प्राप्त की है। जर्मनी, इटली, ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय देशों से भी भारत के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुए है। नवंबर, 2015 में ब्रिटेन के वेंवले स्टेडियम में भारत का नेतृत्व कर रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुनने के लिए 60 हजार लोगों का एकत्रित होना इस तथ्य का सूचक है कि भारत वैश्विक नेतृत्व का पुष्ट उदाहरण है।

अमेरिका, यूरोप तथा अफ्रीका जैसे देशों के साथ भारत की विदेश नीति में पड़ोसियों से सोहार्दपूर्ण संबंधों की प्राथमिकता रही है। इसके अतिरिक्त आज बांग्लादेश भारत के स्वतंत्रता दिवस की परेड में अपनी सेना से सलामी दिलाकर भारत के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है। इसके साथ ही मालदीव सम्पूर्ण विश्व में भारतीय शौर्य की ध्वनि को प्रकट करता है। श्रीलंका, जो तमिलों के विषयों पर भारत के विरुद्ध स्वर प्रकट करता था, आज के समय में भारत से मैत्री पर अभिमान करता है।

## संदर्भ–सुची

Jivanta Schotti and Markus Pauli, (2014). India as a Global Security Actor- The Handbook of Global Security Policy, https://www.researchgate.net/publication/276432

J Jung, (2016). Global Governance: Present and Future, Palgrave Commun 2, 15045 , http://doi.org/10.1057, Palcomms.2015.45

Sujit Lahiry (2019). "Conflict, Peace and Security: An International Relations Perspective with Special Reference to India", Millennial Asia 10(1) 76-90, in.sagepub.com/journals-permission-India, DOI: 10.1177/0976399619825691.

http://www.indiatoday.in

m.economictimes.com

www.bbc.com

http://m.economictimes.com

♦♦♦♦♦

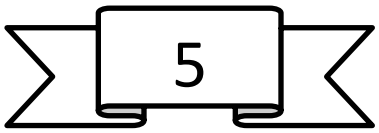


# जलवायु कूटनीति और भारत

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन समस्त मानव प्रजाति के समक्ष एक भयावह समस्या का रूप धारण कर रही है। जलवायु परिवर्तन से जनित अनेकों चुनौतियां जैसे बढ़ता तापमान, हिमालय एवं इंडीज पर्वत श्रंखलाओं में पिघलते ग्लेशियर, बदलता मौसम पैटर्न, तथा कैरीबियन व ओशिनियाई विभागों में बढ़ते तूफान एक भयावह तस्वीर प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन समस्त विश्व के सामने उन महत्वपूर्ण चुनातियों में से एक है जिसके प्रभावों को प्रत्यक्ष रूप से महसूस किया जा रहा है। वैश्विक औसत तापमान में निरंतर वृद्धि के प्रभाव हैं समुद्र स्तर का बढ़ना, जंगल में आग, बाढ़ ग्लेशियर का सिकुड़ना, वर्षा के स्वरूप में बदलाव सूखा आदि। नासा के एक अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तन व तापमान वृद्धि का कारण स्वयं मनुष्य ही है।

विशेषज्ञों का मानना है की जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौती से लड़ने के लिए वैश्विक समुदाय को एक व्यापक गठबंधन की आवश्यकता है। यह समस्या देशों के मध्य आपसी सहयोग से ही सुलझाए जा सकती है क्योंकि यदि एक देश वैश्विक मानकों का पालन करते हुए कार्बन उत्सर्जन में कमी करता है और बाकी देश इसकी अनदेखी करते हैं तो मानकों का पालन करने वाले देशों को भी इसका कोई लाभ नहीं होगा और इसका परिणाम समस्त विश्व को भुगतना पड़ेगा। ऐसे में जलवायु परिवर्तन के लिए किए जा रहे सभी प्रयास विफल रहेंगे इसके लिए आवश्यक है की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी देशों की सहमति से एक सुदृढ़ जलवायु कूटनीति विकसित की जाए जिसको क्रियान्वित करने के लिए सभी देश अपनी अपनी क्षमताओं के अनुसार प्रतिबद्ध हो।

## जलवायु कूटनीति के संदर्भ में भारत की भूमिका

विशेषज्ञों के अनुसार जलवायु कूटनीति से तात्पर्य है अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन से लड़ने हेतु एक व्यवस्था विकसित करना और इसका प्रभावी रूप से संचालन सुनिश्चित करना।

सरल शब्दों में कहें तो किसी राष्ट्र द्वारा अपनी विदेश नीति में जलवायु परिवर्तन को स्थान देना ही जलवायु कूटनीति कहलाता है।

भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। विश्लेषकों का मानना है कि भारत जलवायु कूटनीति को सक्रिय रूप से संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पिछले 5 दशकों में जलवायु परिवतन वैश्विक स्तर पर हुई बैठकों का मुख्य केंद्र रहा है जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थाओं और वैश्विक पर्यावरण कानून को बढ़ावा मिला है।

जलवायु कूटनीति के संदर्भ में भारत के लिए आवश्यक है कि अपनी विदेश नीति के एजेंडा में जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग को अहम स्थान दे। 1990 के दशक में जलवायु कूटनीति पर भारत का रुख पर्यावरणीय उपनिवेशवाद के विषय को उजागर करते हुए विकसित हुआ। इसके लिए भारत ने समान किंतु विभेदित दायित्व के सिद्धांत का प्रयोग किया। जिससे भारत को अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी संस्था की स्थापना करने की प्रेरणा मिली। यह सिद्धांत जलवायु परिवर्तन की चुनौती को संबोधित करने में अलग–अलग देशों की विभिन्न क्षमताओं व दायित्व को स्वीकार करता है।

जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक इस बात को स्वीकारते हैं कि पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक आर्थिक विकास एक दूसरे पर निर्भर हैं इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारत को अपनी जलवायु कूटनीति के संबंध में ऐसे विकास के स्वरूप को तैयार करने की आवश्यकता है जो अनुकूलन (Adaptation) पर केंद्रित हो। जलवायु परिवर्तन के साथ ही भारत की अन्य समस्त जरूरतों को भी संबोधित करें तथा वित्त और तकनीक जैसे मुद्दों पर पश्चिम से सहयोग को प्रोत्साहित करे।

इसके अतिरिक्त एक तथ्य यह भी है की पर्यावरण के लिए तकनीकी सहयोग से एक देश का आर्थिक लाभ किसी अन्य देश के साथ उसका स्थाई संबंध सुनिश्चित कर सकता है जिसका प्रभाव वैश्विक क्रियाओं पर भी देखने को मिलता है। इस संदर्भ में भारत द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा को अपनी घरेलू जरूरतों एवं विकास क्रियाओं में प्राथमिकता देना एक उत्तम उदाहरण है। इसके अतिरिक्त उदाहरण के लिए जर्मनी द्वारा अपने घरेलू योजनाओं के अंतर्गत नवीकरणीय ऊर्जा की कीमतों में कमी करना नवीकरणीय ऊर्जा के वैश्विक मूल्यों का समर्थन करता है। इसी प्रकार भारत भी नवीकरणीय ऊर्जा को जब से अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में प्रदर्शित करने लगा है तो जलवायु परिवर्तन के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में भारत का महत्व बढ़ा है।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत द्वारा जलवायु परिवर्तन को वृहद रुप से संबोधित करने के लिए वर्ष 2008 में जलवायु परिवर्तन नीति की शुरुआत की गई। वर्ष 2008 में जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (National Action Plan on Climate Change एनएपीसीसी) की घोषणा की गई। इसके अंतर्गत जलवायु परिवर्तन में दीर्घकालिक, बहुआयामी और एकीकृत रण नीतियों के महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 8 राष्ट्रीय मिशन सम्मिलित किए गए। राष्ट्रीय मिशन में राष्ट्रीय सौर मिशन, राष्ट्रीय जल मिशन, राष्ट्रीय हरित भारत मिशन आदि शामिल हैं। इन नीतियों को एक लंबी समयावधि बीत जाने के बाद भी जलवायु परिवर्तन की रोकथाम में यह उपाय कोई खास सफलता प्राप्त नहीं कर पाए हैं। इसका प्रमुख कारण है इन नीतियों के कार्यों की प्रगति की समीक्षा के लिए कोई वैधानिक व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी वैश्विक समुदाय द्वारा जलवायु परिवर्तन की रोकथाम की दिशा में उठाए कदम विकराल होती इस समस्या में नाकाम ही सिद्ध हुए। यह जलवायु परिवर्तन के संबंध में अंतर सरकारी पैनल की हाल ही में जारी हुए प्रतिवेदन से सिद्व होता है। आईपीसीसी (International Panel on Climate Change) की रिपोर्ट के अनुसार यदि आने वाले 2 दशकों में ग्रीन–हाउस गैस उत्सर्जन में बड़े पैमाने पर कटौती नहीं की गई तो अगले 20 वर्ष में वैश्विक तापमान अनुमानित 1.5 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी को कोई नहीं रोक सकता।

पेरिस समझौते का विश्लेषण

वर्ष 2015 में जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावां को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) के अंतर्गत सदस्य देशों ने संयुक्त नेतृत्व में पैरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए। पेरिस समझौते के अनुसार 197 देशों के स्वैच्छिक राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (Nationally Determined Contribution) के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के संकट को टालने का प्रयास करता है।

लगभग पिछले 5 दशकों से जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देशों के मध्य विभिन्न समझौते हुए। परंतु विडंबना यह है कि अथक प्रयासों के बावजूद भी जलवायु परिवर्तन की समस्या दिन पर दिन भयावह होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण है वैश्विक स्तर पर तय हुए देशों के मध्य समझौतों की रूपरेखा। वर्ष 2015 में हुए पेरिस समझौते की यदि बात करें तो आज तक भी वैश्विक स्तर पर हुआ यह सामूहिक प्रयास विफल सिद्ध हुआ। इसका मुख्य कारण है पेरिस समझौते की रूपरेखा। समझौते के अनुसार विकसित देश या अन्य कोई भी देश जलवायु लक्ष्य को मारने के लिए प्रतिबंध नहीं है। यह एक स्वैच्छिक समझौता है। इसे राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (Nationally Determined Contribution) कहा जाता है। इसके अनुसार विकसित

व विकासशील देशों से अपेक्षा की गई की वे निर्धन देशों की तुलना में कार्बन उत्सर्जन में अधिक कमी करेंगे। परंतु यदि कोई विकसित देश उत्सर्जन में कमी नहीं करता है तो उस पर कार्यवाही या जुर्माना नहीं लगाया जा सकता। अर्थात इस समझौते का आधार देशों की आपसी सद्भावना ह।

इस समझौते की दूसरी बड़ी कमी है कि इस वार्ता का आधार देशों के मध्य सहयोग के स्थान पर प्रतिस्पर्धा है। इस वार्ता में जलवायु परिवर्तन की समस्या को एक पर्यावरण वार्ता के स्थान पर आर्थिक वार्ता के रूप में देखा गया इससे भी दुखद यह है कि जलवायु परिवर्तन पर हुइ बैठकों को जीरो सम गेम के रूप में देखा जाता है उदाहरण के तौर पर बात करें तो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का मानना था कि कार्बन उत्सर्जन में कमी करने से अमेरिकी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचेगा और इससे चीन को लाभ होगा इसलिए अमेरिका ने स्वयं का इस समझौते से अलग कर दिया और चीन भी इसी कारण से सबसे बड़ा प्रदूषक होने के बावजूद उत्सर्जन में कटौती करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है।

वास्तविकता यह है समस्त देश विश्व के हित के स्थान पर अपने संकीर्ण हित को देख रहे हैं अपने स्वार्थ हित को पूरा करने के उद्देश्य स कम कार्बन उत्सर्जन कमी के लक्ष्य को निर्धारित करते हैं यही तथ्य पेरिस समझौते की सबसे बड़ी कमी है इसके परिणाम स्वरूप पेरिस समझौता ग्लोबल वार्मिंग को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने के लक्ष्य को पूरा करने में सफल नहीं रहा। आज हम सभी को यह समझना होगा कि सभी देशों के हित समस्त विश्व के हित में समाहित हैं। कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए सभी देशों को आपसी सहयोग से काम करने की आवश्यकता है ना कि प्रतिस्पर्धा से। यह तभी संभव है जब जलवायु परिवर्तन से जुड़ी वार्ता को जीरो सम गेम की जगह पॉजिटिव सम गेम के रूप में देखा जाएगा। समकालीन युग में यह सरलता से संभव है क्योंकि कार्बन उत्सर्जन में कमी और आर्थिक विकास में वृद्धि एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं। आज के समय में बैटरी सुपर एफिशिएंट उपकरण और स्मार्ट ग्रिड जैसी तकनीकों के प्रयोग में तेजी से गिरावट आ रही है। ऐसे में देश अगर आपस में सहयोग करें तो न्यूनतम कार्बन या कार्बन रहित प्रौद्योगिकियों की लागत अधिक तेजी से कम हो सकती है।

यदि जलवायु परिवर्तन वार्ता में परिवर्तन नहीं किए गए तो नियमित जलवायु परिवर्तन पर होने वाली नियमित बैठकें  महज एक फैशन बन कर रह जाएगी, उनका वास्तव में कोई लाभ नहीं होगा। जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए आवश्यक है एक सार्थक अंतरराष्ट्रीय सहयोग के तहत एक नए तंत्र का निर्माण किया जाए।

जलवायु परिवर्तन पर भारत का बदलता रुख

वर्ष 2015 के पश्चात् से भारत ने जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए एक सख्त रुख अपनाया है। वैश्विक स्तर पर हो या घरेलू स्तर पर भारत ने पर्यावरणीय समस्या एवं जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए विकास की प्रक्रिया को पूरा करने की घोषणा की तथा इसके लिए अनेकों प्रयास भी शुरू किए है। चीन सहित विभिन्न देशों द्वारा शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्यों की घोषणाओं के आलोक में भारत ने तेजी दिखाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वैश्विक स्तर पर जलवायु व्यवस्था में भारत की छवि एक जिम्मेदार जलवायु शक्ति के रूप में विकसित हुई है। ग्लासगों में पिछले वर्ष हुई क्लाइमेट चेंज सम्मिट में प्रधान मंत्री द्वारा वर्ष 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्यों की घोषणा इसका प्रमाण है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने बेबाकी से विकसित राष्ट्रों को अपने पुराने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भी चेताया है। भारत द्वारा वैश्विक मंच पर जलवायु परिवर्तन को लेकर यह कथन भारत की मजबूत स्थिति को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली वर्तमान सरकार ने अपनी विदेश नीति के एजेंडे में जलवायु कूटनीति को केंद्र में रखा है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की भारत की अवधारणा और आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (सीडीआरआई), और बहुपक्षीय जलवायु कार्रवाई एजेंडा में उनका एकीकरण इस बदलाव का प्रमाण है।

1990 के दशक में भारत पर्यावरण के मुद्दों को लेकर वैश्विक मंचों पर महाशक्तियों से कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को लेकर संघर्ष करता था। उस समय संयुक किंतु विभिन्न दायित्व के सिद्धांत (Common but Differentiated Responsibility) के आधार पर वैश्विक महाशक्तियों से उत्सर्जन के लक्ष्यों पर उनकी प्रतिबद्धता व्यक्त करवाने में मध्यस्थ की भूमिका में रहता था। परंतु वर्तमान समय में, विशेषत 2014 के बाद से, भारत जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर सहयोगकर्ता की भूमिका में आ गया है। यह परिवर्तन भारत की सुदृढ़ विदेश नीति एवं वैश्विक स्तर पर भारत के मजबूत नेतृत्व के कारण संभव हो पाया है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में महत्वपूर्ण है कि जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को आर्थिक दृष्टि से न देखा जाए। इसे एक पर्यावरणीय मुद्दा समझकर इसके रणनीतिक महत्व को भी समझा जाए जिसे केवल आपसी सहयोग से ही लड़ा जा सकता है। देशों के लिए आवश्यक है कि अपने स्वार्थ हित को अनदेखा कर सामूहिक हित को पूरा करने का प्रयास करे । साथ ही जलवायु परिवर्तन पर कठोरता से काम करने के लिए आवश्यक है कि वैश्विक समझौते को मानने के लिए देशों की प्रतिबद्धता सुनिश्चित होनी हो। भारत अपनी प्रथम पड़ोस की नीति को अपनाकर जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। विदेश नीति में जलवायु परिवर्तन को शीर्ष स्थान देना तथा जलवायु

कूटनीति की ओर अग्रसर होना भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक नेता के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

♦♦♦♦♦

# सी जी एस

# वैश्विक अध्ययन केंद्र

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281